भाषा विकास परिवर्तन के कारण-

डॉ. जशाभाई पटेल

भाषा परिवर्तन के दो कारण हैं-

(अ) आभ्यंतर

(ब) बाह्य

भाषा विकास परिवर्तन के कारण-

डॉ. जशाभाई पटेल

(अ) आभ्यंतर-

(1) प्रयत्नलाघव
(2) अधिक प्रयोग
(3) बलाघात
(4) अपूर्ण अनुकरण
(5) मानसिक योग्यता
(6) बलात परिवर्तन
(7) भावावेश
(8) सादृश्य
(9) असावधानी

भाषा विकास परिवर्तन के कारण-

डॉ. जशाभाई पटेल

(1)प्रयत्नलाघव- मनुष्य शब्दों का उच्चारण करते समय सरलता के साथ शीघ्रता चाहता है। प्रयत्नलाघव की इस प्रवृत्ति के कारण शब्द का उच्चारण करते समय उसका रूप बदल जाता है। **उदाहरण के लिये मॉस्टर साहब, पण्डित जी, कृष्णचन्द्र आदि मास्साहन, पंडितजी, किशनचन्दर हो जाते हैं।**

भाषा विकास परिवर्तन के कारण-

डॉ. जशाभाई पटेल

(2) अधिक प्रयोग- दीर्घ काल से शब्द प्रयोग प्रवाह में बहता हुआ आगे बढ़ता जाता है। प्रयोग की इसी अधिकता के कारण शब्द घिसते जाते हैं और धीरे-धीरे लुप्त भी हो जाते हैं।

उदाहरण- संस्कृत भाषा की कारकीय विभक्तियां धीरे-धीरे घिसते घिसते समाप्त हो गई जिसके फलस्वरूप हिन्दी भाषा में परसंर्गों की आवश्यकता पड़ी। परिवर्तन का यह कारण भाषा में स्वाभाविक विकास ला देता है।

भाषा विकास परिवर्तन के कारण-

डॉ. जशाभाई पटेल

(3) बलाघात- बलाघात का "तात्पर्य है किसी अकेले व्यञ्जन, शब्दांश या शब्द पर बोलते समय बल डालना इसी प्रकार स्वर पर बल पड़ने में स्वराघात होता है।

उदाहरण - निम्ब का नीम रह जाना

बिल्ब' का बेल हो जाना

कभी-कभी तो बलाघात इतना प्रबल होता है कि एक बड़ा शब्द घिसते घिसते बहुत छोटा शब्द रह जाता है। **उपाध्याय शब्द का "झा" हो जाना।**

भाषा विकास परिवर्तन के कारण-
डॉ. जशाभाई पटेल

(4) अपूर्ण अनुकरण- जिनमें अज्ञान, अशिक्षा अथवा श्रवण यन्त्र या वाग्यन्त्र की भिन्नता अनुकरण हर समय पूर्ण ही होता हो, ऐसा नहीं है। कभी-कभी यह अनुकरण अपूर्ण भी रहता है.

उदाहरण- अशिक्षित लोगों के अंग्रेजी भाषा के अज्ञान के कारण, उनके द्वारा प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों का रूप विचित्र हो जाता है, 'सिगनल' का 'सिंगल', 'डाउन' का 'डॉन' 'टिकट' का 'टिकस' या टिकट' 'लाइब्रेरी' को 'रायबरेली', 'रिपोर्ट' का रपट आदि उच्चारण इसी अपूर्ण अनुकरण के परिणाम हैं।

भाषा विकास परिवर्तन के कारण-
डॉ. जशाभाई पटेल

(5) मानसिक योग्यता-

भाषा का यह परिवर्तन विशेष रूप से शब्दों के अर्थ में देखने को मिलता है।

सुनने वालों की मानसिक योग्यता के अनुसार उसका अर्थ घटता-बढ़ता रहता है

उदाहरण के लिये ब्रह्म शब्द का अर्थ एक दार्शनिक के लिये तथा एक सामान्य मनुष्य के लिये अलग-अलग है। इस प्रकार भाषा के प्रयोग कर्त्ताओं की मानसिक योग्यता का प्रभाव उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा में परिवर्तन ला देता है ।

भाषा विकास परिवर्तन के कारण-

डॉ. जशाभाई पटेल

(7) भावावेश- प्रेम, घृणा, क्रोध, दुःख आदि भावों की अधिकता प्रमुख है। भावावेश की स्थिति में आ जाता है।

उदाहरण के लिये प्रेम या दुलार बच्चों को बचुआ, बेटा को बेटवा बेटी को बिटिया या बिट्टो, क्रोध के 'रामेश्वर' को रमेसरा, चमार को चमरवा या 'चमरा' जैसे प्रयोग इसी भावावेश की स्थिति का परिणाम है। इस प्रकार भाषा-परिवर्तन में भावावेश का भी प्रमुख स्थान है।

भाषा विकास परिवर्तन के कारण- डॉ. जशाभाई पटेल

(6) बलात् परिवर्तन- भाषा में जान-बूझ कर भी परिवर्तन

लेखक आदि वर्ग विशेष वस्तुतः यह परिवर्तन भाषा का स्वाभाविक परिवर्तन नहीं कहा जा सकता इसीलिए भाषा परिवर्तन के इस कारण का नामकरण बलात् परिवर्तन किया गया है।

हिन्दी के यशस्वी साहित्यकार प्रसाद के द्वारा 'अलेकजेंडर' का अलक्षेन्द्र कर देना, जाग का जागरी

उदाहरण के लिये अंग्रेजी के 'ट्रेजडी' और 'कमेडी' का हिन्दी में क्रमशः 'त्रासदी' और 'कामदी' जैसे शब्द, परिवर्तन के इसी कारण का परिणाम है। उदाहरण के लिए हिन्दी में स्वीकारना, बतियाना, नकारना जैसे क्रिया रूप ।

भाषा विकास परिवर्तन के कारण-

डॉ. जशाभाई पटेल

(8) सादृश्य- सादृश्य भी भाषा परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। कभी-कभी यह परिवर्तन बहुत त्रुटिपूर्ण होता है। हिन्दी के 'सृष्टा' जैसे शब्द इसी सादृश्य का परिणाम है वस्तुतः शुद्ध शब्द है- स्रष्टा । परन्तु सृष्टि शब्द के सादृश्य पर 'सृष्टा' शब्द का निर्माण कर लिया। गया है। इसी प्रकार दृष्टा शब्द का निर्माण भी हुआ है जो 'दृष्टि' शब्द के सादृश्य पर गढ़ा गया है। जबकि सही शब्द है 'द्रा अंग्रेजी भाषा में भी कतिपय शब्दों के निर्माण के पीछे यही कारण है, उदाहरण के लिए Shall का Should will का would रूप जैना सकारण है क्योंकि Shall और will जैसे शब्दों में तो वर्ण है परन्तु Can शब्द में वर्णन होने पर भी उससे could शब्द बनना इसी सादृश्य का परिणाम है।

विकास परिवर्तन के कारण-

डॉ. जशाभाई पटेल

9. **असावधानी**:- असावधानी अथवा अज्ञानता के कारण भी कभी-कभी नए रूपों का निर्माण हो जाता है। कभी लोग अज्ञानता के कारण शब्दों का प्रयोग करते हैं और प्रचलित हो जाने के कारण मूल रूप भूल जाते हैं। और जो परिवर्तित नया रूप सामने आता है वह चल पड़ता है।

उदाहरणस्वरूप, 'फजूल' के स्थान पर 'बेफज़ुल', कृपणता के स्थान पर कृपणताई, और 'अभिज्ञ' के स्थान पर 'भिज्ञा' आदि। शाप का श्राप, नरक का नर्क, सौन्दर्य का सौन्दर्यता जैसे प्रयोग इस असावधानी के परिणाम है। प्रयोग-प्रवाह में आ जाने पर धीरे-धीरे यही विकृत शब्द भाषा में स्थान पाने लगते हैं। इस प्रकार असावधानी का यह कारण भाषा-परिवर्तन उपस्थित कर देता है।

विकास परिवर्तन के कारण-

डॉ. जशाभाई पटेल

(ब) बाह्य कारण

- (1) व्यक्तिगत कारण - स का श उच्चार
- (2) सामाजिक कारण- एक भाषा के सम्पर्क प्रभाव से दूसरी भाषा से
- (3) धार्मिक कारण- जब एक धर्म के अनुयायी दूसरे धर्मानुयायियों के सम्पर्क में आते हैं तब
- (4) राजनीतिक कारण – विविध राज्य सत्ता आई
- (5) आर्थिक कारण
- (6) सांस्कृतिक कारण-
- (7) भौगोलिक कारण -इंग्लैण्ड के निवासी तुम्हारा को मारा, तोताराम को टोटाराम ठाकुर को टैगोर उच्चारण
- (8) वैज्ञानिक कारण